

क. तैयारी:

❖ सत्त्व (निर्गमन 35:1-3)

- परमेश्वर की महिमा की एक झलक पाने के बाद, मूसा ने लोगों को "जिस बात की आज्ञा यहीवा ने दी है" बताई (निर्गमन 35:1, 4)। इन निर्देशों में समय (सत्त्व) और स्थान (तम्बू) में परमेश्वर के साथ संबंध शामिल हैं।
- परमेश्वर ने सृष्टि के समय सत्त्व के दिन को हमारे लिए उसकी संगति का आनन्द लेने के लिए एक विशेष समय के रूप में निर्धारित किया था (उत्पत्ति 2:1-3; निर्गमन 20:11), और दस आज्ञाओं की घोषणा करने से कुछ समय पहले उसने इस्राएल को इसकी याद दिलाई थी (निर्गमन 16:22-29)।
- सत्त्व हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर हमारा सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता है (व्यवस्थाविवरण 5:15), और यह हमें भविष्य के उस समय में ले जाता है जब हम अनंत काल तक उसकी संगति का आनंद ले सकते हैं (यशायाह 66:22-23)।

❖ स्वैच्छिक दान (निर्गमन 35:4-36:7)

- तम्बू के कार्य में योगदान करने के दो तरीके थे: सामग्री दान करना और श्रम दान करना।
- इसके अलावा, सूत कातने वालों, दर्जी, बढ़ई, लकड़ी के नक्काशीकार, जौहरी आदि के श्रम दान की भी आवश्यकता थी।
- सभी लोग सहयोग करने के लिए इतने इच्छुक थे कि बसलेल, ओहोलीआब और अन्य कार्यकर्ताओं ने मूसा से लोगों को दान लाने से रोकने के लिए कहा (निर्गमन 36:3-7)।
- कार्य को पूरा करने के लिए, पवित्र आत्मा ने इसमें शामिल सभी कार्यकर्ताओं को वरदान दिए (निर्गमन 35:30-36:2)। इसी प्रकार, वह परमेश्वर के कार्य में सहयोग करने वाले सभी लोगों को आवश्यक वरदान देना जारी रखता है।

A. तम्बू:

❖ निर्माण (निर्गमन 36:8-39:43)

- मिलापवाले तम्बू का कार्य पूरा करने के लिए कौन से तत्व आवश्यक थे?
 - निवासस्थान (पवित्र और महापवित्र स्थान); स्वर्ण सन्दूक; रोटी की मेज़; दीवट; धूप की वेदी; होमबलि की वेदी; कांसे का हौज़; बाहरी आँगन; एपोद; छाती की चपरास; बाकी वस्त्र
- एक बार बन जाने के बाद, पवित्रस्थान (तम्बू और आँगन) में दो अलग-अलग सेवाएँ की जाती थीं: दैनिक और वार्षिक। इन विभिन्न संस्कारों को एक साथ देखने पर हमें यह शिक्षा मिलती है कि:
 - परमेश्वर पाप से घृणा करता है
 - परमेश्वर पापी को बचाता है
 - परमेश्वर दुष्टों का नाश करेगा
 - परमेश्वर हमें एक शानदार भविष्य का आश्वासन देता है
- दैनिक सेवा के माध्यम से, परमेश्वर ने वह तरीका दिखाया जिसमें वह पापी को क्षमा करता है: एक निर्दोष पशु की बलि के माध्यम से, "परमेश्वर का मेज़ जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29)।
- वार्षिक सेवा (प्रायश्चित्त का दिन) के माध्यम से, परमेश्वर ने दिखाया कि वह किस प्रकार ब्रह्माण्ड से पाप को मिटाएगा, बुराई की समस्या का अंतिम समाधान दर्शाते हुए (भजन संहिता 73:17)।
- यह पवित्रस्थान परमेश्वर की आराधना, उसकी स्तुति और कृतज्ञता व्यक्त करने का स्थान भी था।

❖ समर्पण (निर्गमन 40:1-38)

- निर्गमन की पुस्तक पवित्रस्थान और उसके याजकों के समर्पण के साथ समाप्त होती है। इस अध्याय का नायक निस्संदेह परमेश्वर है, जो अपनी महिमामय उपस्थिति से सब कुछ भर देता है (निर्गमन 40:34)। यह उपस्थिति बादल में तम्बू और शेकिना (सन्दूक के कर्बुबों के बीच दिव्य महिमा का प्रकटीकरण) के साथ बनी रही।
- महीनों के काम के बाद, मिस्र से उनके प्रस्थान के बाद दूसरे वर्ष के पहले महीने के पहले दिन पवित्रस्थान का निर्माण किया गया (निर्गमन 40:2, 17)। सब कुछ नियमानुकूल व्यवस्थित किया गया (सन्दूक, पर्दा, मेज, दीवट, सोने की वेदी, पीतल की वेदी, हौदी) और पवित्र किया गया (निर्गमन 40:9)।
- अन्त में, हारून और उसके पुत्रों को याजकीय वस्त्र पहनाये गये, और उनके कार्य के लिए उनका अभिषेक किया गया। (निर्गमन 40:12-15)

B. अन्य तम्बू:

❖ यीशु और नया यरूशलेम

- यूहन्ना 1:14 में शाब्दिक रूप से कहा गया है कि यीशु देहधारी हुआ और हमारे बीच में "डेरा किया" (एक तम्बू) बना। अपने देहधारण के साथ, यीशु, अनन्त परमेश्वर ने हमारे बीच शारीरिक रूप से निवास करने की अपनी इच्छा पूरी की। वह इम्मानुएल बन गया, अर्थात् परमेश्वर हमारे साथ (मत्ती 1:23)।
- पवित्र आत्मा के द्वारा, परमेश्वर आज भी हमारे साथ वास करता है (मत्ती 18:20; 1 कुरिन्थियों 3:16)।
- परन्तु वह दिन शीघ्र ही आएगा जब हम अपने परमेश्वर के आमने-सामने खड़े हो सकेंगे और उसके साथ उस राजकीय तम्बू में निवास कर सकेंगे जिसे उसने हमारे लिए तैयार किया है: नया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:3)।
- यह तब होगा जब उद्धार की योजना पूरी हो जाएगी, और बुराई पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी।